ॐ

श्री हरिः

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी कृत

वैराग्य - संदीपनी

मंगलाचरण और भगवत स्वरुप वर्णन

राम बाम दिसि जानकी, लखन दाहिनी ओर,
ध्यान सकल कल्यानमय, सुर तरु तुलसी तोर [१]

तुलसी मिटै न मोह तम, किये कोटि गुन ग्राम,
हृदय कमल फूले नहीं, बिनु रबि-कुल-रबि राम [२]

सुनत लखत श्रुति नयन बिनु, रसना बिनु रस लेत,
बास नासिका बिनु लहै, परसे बिना निकेत [३]

अज अद्वैत अनाम, अलख रूप गुन गन रहित जो,
माया पति सोई राम, दास हेतु नर तन धरेउ [४] [सोरठा]

तुलसी यह तनु खेत है, मन वच कर्म किसान,
पाप -पुण्य द्वै बीज हैं, बवै सो लवै निदान [५]

तुलसी यह तनु तवा है, तपत सदा त्रै ताप,
सांति होई जब सांति पद, पावै राम प्रताप [६]

तुलसी बेद --पुरान मत, पूरन सास्त्र बिचार,
यह बिराग - संदीपनी अखिल ज्ञान को सार [७]

संत स्वभाव वर्णन

सरल बरन भाषा सरल, सरल अर्थमय मानि,
तुलसी सरले संतजन, ताहि परी पहिचानि [८]

अति सीतल अति ही सुख दाई,
सम दम राम भजन अधिकाई।
जड़ जीवन कौं करै सचेता,
जग महै विचरत हैं एहि हेता॥ [९] [चौपाई]

तुलसी ऐसे कहुं कहूँ, धन्य धरनी वह संत,
परकाजे परमारथी, प्रीति लिए निबहंत [१०]

की मुख पट दीन्हें रहें, जथा अर्थ भाषंत,
तुलसी या संसार में, सो विचारजुत संत [११]

बोलै वचन बिचारि कै, लीन्हें संत सुभाव,
तुलसी दुःख दुर्बचन के, पंथ देत नहीं पाँव [१२]

सत्रु न काहू करि गनै, मित्र गनै नहिं काहि,
तुलसी यह मत संत को, बोले संता माहिं [१३]

अति अनन्य गति इन्द्री जीता,
जाको हरि बिनु कतहुं न चीता।
मृग तृष्णा सम जग जिय जानी,
तुलसी ताहि संत पहिचानी॥ [१४] [चौपाई]

एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास,
राम रूप स्वाती जलद, चातक तुलसी दास [१५]

सो जन जगत जहाज है, जाके राग न द्वोष,
तुलसी तृष्णा त्यागि कै, गहै सील संतोष [१६]

सील गहनि सब की सहनि, कहनि हीय मुख राम,
तुलसी रहिये यहि रहनि, संत जनन को काम [१७]

निज संगी निज सम करत, दुर्जन मन दुःख दून,
मलयाचल हैं संतजन, तुलसी दोष बिहून [१८]

कोमल वाणी संत की, स्रवत अमृतमय आइ,
तुलसी ताहि कठोर मन, सुनत मैन होई जाइ [१९]

अनुभव सुख उतपति करत, भय- भ्रम धरे उठाए,
ऐसी बानी संत की, जो उर भेदै आए [२०]

ऐसी बानी संत की, सासिहू ते अनुमान,
तुलसी कोटि तपन हरै, जो कोऊ धारै कान [२१]

पाप ताप सब सूल नसावें,
मोह अंध रबि बचन बहावैं।
तुलसी ऐसे सदगुन साधू,
बेद मध्य गुन बिदित अगाधू॥ [२२] [चौपाई]

तन करि मन करि बचन करि, काहू दुखत नाहिं,
तुलसी ऐसे संत जन रामरूप जग माहिं [२३]

मुख दीखत पातक हरै, परसत करम बिलाहिं
बचन सुनत मन मोहगत, पूरब भाग मिलाहिं [२४]

अति कोमल अरु बिमल रूचि, मानस में मल नाहिं,
तुलसी रत मन हुई रहे, अपने साहिब मांहि [२५]

जाके मन ते उठि गई, तिल-तिल तृष्णा चाहि,
मनसा बाचा कर्मना, तुलसी बंदत ताहि [२६]

कंचन काँचही सम गनै, कामिनी काष्ठ पषान,
तुलसी ऐसे संतजन, पृथ्वी ब्रह्म समान [२७]

कंचन को मृतिका करि मानत,
कामिनी काष्ठ सिला पहिचानत।
तुलसी भूलि गयो रस एहा,
ते जन प्रगट राम की देहा॥ [२८] [चौपाई]

आकिंचन इन्द्रीदमन, रमन राम एक तार,
तुलसी ऐसे संत जन, बिरले या संसार [२९]

अहंबाद 'मैं' 'तैं' नहीं, दुष्ट संग नहिं कोय,
दुःख ते दुःख नहिं ऊपजे, सुख तें सुख नहिं होय [३०]

सम कंचन कान्चै गिनत, सत्रु मित्र सम दोए,
तुलसी या संसार में, कहत संत जन सोए [३१]

बिरले बिरले पाएये, माया त्यागी संत,
तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी केक अनंत [३२]

मैं तैं मेट्यो मोह तम, उग्यो आत्मा भानु,

संत राज सो जानिए, तुलसी या सहिदानु [३३]

संत --महिमा वर्णन

को बरनै सुख एक, तुलसी महिमा संत की,
जिन्ह के बिमल बिबेक, सेस महेस न कही सकत [३४] [सोरठा]

माहि पत्री करी सिन्धु मसि, तरु लेखनी बनाए,
तुलसी गनपत सों तदपि, महिमा लिखी न जाए [३५]

धन्य धन्य माता पिता,धन्य पुत्र बार सोय,
तुलसी जो रामहिं भजे, जैसेहूँ कैसेहूँ कोय [३६]

तुलसी जाके बदन ते, धोखेहूँ निकसत राम,
ताके पग की पगतरी, मेरे तन को चाम [३७]

तुलसी भगत सुपच भलौ, भजै रैन दिन राम.
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरी को नाम [३८]

अति ऊँचे भू धरनि पर, भुजगन के अस्थान,
तुलसी अति नीचे सुखद, ऊख अन्न अरु पान [३९]

अति अनन्य जो हरि को दासा,
रतै नाम निसिदिन प्रति स्वासा।
तुलसी तेहि समान नहीं कोई,
हम नीकें देखा सब कोई॥ [४०] [चौपाई]

जदपि साधु सबही बिधि हीना,
तद्यपि समता के न कुलीना।
यह दिन रैन नाम उच्चरै,
वह नित मान अगिनी मंह जरै॥ [४१] [चौपाई]

दास रता एक नाम सों, उभय लोक सुख त्यागि,
तुलसी न्यारो ह्वै रहै, दहै न दुःख की आगि [४२]

शान्ति - वर्णन

रैनि को भूषन इंदु है, दिवस को भूषन भानु,

दास को भूषन भक्ति है, भक्ति को भूषन भानु [४३]

ज्ञान को भूषन ध्यान है,ध्यान को भूषन त्याग
त्याग को भूषन शान्ति पद, तुलसी अमल अदाग [४४]

अमल अदाग शान्तिपद सारा,
सकल कलेस न करत प्रहारा।
तुलसी उर धारै जो कोई,
रहै अनन्द सिन्धु मंह सोई॥ [४५] [चौपाई]

बिबिध पाप सम्भव जो तापा,
मिटहिं दोष दुःख दुसह कलापा।
परम सांति सुख रहै समाई,
तहाँ उत्पात न भेदै आई॥ [४६] [चौपाई]

तुलसी ऐसे सीतल संता,
सदा रहै एहि भांति एकन्ता।
कहा करै खल लोग भुजंगा,
कीन्हौ गरल - सील जो अंगा॥ [४७] [चौपाई]

अति सीतल अति ही अमल, सकल कामना हीन
तुलसी ताहि अतीत गनि, बृत्ति सांति लयलीन [४८]

जो कोई कोप भरे मुख बैना,
सन्मुख हतै गिरा - सर पैना।
तुलसी तऊ लेस रिस नाहीं,
सो सीतल कहिये जग माहीं॥ [४९] [चौपाई]

सात दीप नव खंड लौ, तीनि लोक जग मांहि
तुलसी सांति समान सुख, अपर दूसरो नाहिं [५०]

जहाँ सांति सतगुरु की दई,
तहाँ क्रोध की जर जरी गई.
सकल काम बासना बिलानी,
तुलसी बहै सांति सहिदानी [५१] [चौपाई]

तुलसी सुखद सांति को सागर,

संतान गायो कारन उजागर.
तामें तन मन रहै समोई ,
अहम् अगिनि नहिं दाहै कोई [५२] [चौपाई]

अहंकार की अगिनि में,दहत सकल संसार
तुलसी बांची संतजन, केवल सांति आधार [५३]

महा सांति जल पारसी कै, संतभये जन जोई,
अहम् अगिनि ते नहिं दहें, कोटि करें जो कोई [५४]

तेज होत तन तरनी को, अचरज मानत लोई,
तुलसी जो पानी भया, बहुरि न पावक होई [५५]

जद्यपि सीतल सम सुखद, जग में जीवन प्राण
तदपि सांति जल जनि गनौ, पावक तेज प्रमाण [५६]

जरै बरे अरु खीज खिजावे,
राग द्वेष मंह जनम गँवावे।
सपनेहूँ सांति नहिं उन देही,
तुलसी जहाँ - जहों ब्रत येही॥ [५७] [चौपाई]

सोई पंडित सोई पारखी, सोई संत सुजान,
सोई सूर सचेत सो, सोई सुभट प्रमान [५८]

सोई ज्ञानी सोई गुनी जन, सोई दाता ध्यानी
तुलसी जाके चित भई , राग द्वेष की हानि [५९]

राग द्वेष की अगिनि बुझानी
काम क्रोध बासना नसानी।
तुलसी जबहिं सांति गृह आई,
तब उरहीं उर फिरि दोहाई॥ [६०] [चौपाई]

फिरी दोहाई राम की, गे कामादिक भाजि,
तुलसी ज्यों रबि के उदय, तुरत जात तम लाजि [६१]

यह बिराग संदीपनी, सुजन सुचित सुनि लेहु,
अनुचित बचन बिचारि के, जस सुधारि तस् देहु [६२]

तन करि मन करि बचन करि, काहू दुखत नाहिं,
तुलसी ऐसे संत जन रामरूप जग माहिं [२३]

मुख दीखत पातक हरै, परसत करम बिलाहिं
बचन सुनत मन मोहगत, पूरब भाग मिलाहिं [२४]

अति कोमल अरु बिमल रूचि, मानस में मल नाहिं,
तुलसी रत मन हुई रहे, अपने साहिब मांहि [२५]

जाके मन ते उठि गई, तिल-तिल तृष्णा चाहि,
मनसा बाचा कर्मना, तुलसी बंदत ताहि [२६]

कंचन काँचही सम गनै, कामिनी काष्ठ पषान,
तुलसी ऐसे संतजन, पृथ्वी ब्रह्म समान [२७]

कंचन को मृतिका करि मानत,
कामिनी काष्ठ सिला पहिचानत।
तुलसी भूलि गयो रस एहा,
ते जन प्रगट राम की देहा॥ [२८] [चौपाई]

आकिंचन इन्द्रीदमन, रमन राम एक तार,
तुलसी ऐसे संत जन, बिरले या संसार [२९]

अहंबाद 'मैं' 'तैं' नहीं, दुष्ट संग नहिं कोय,
दुःख ते दुःख नहिं ऊपजे, सुख तें सुख नहिं होय [३०]

सम कंचन कान्चै गिनत, सत्रु मित्र सम दोए,
तुलसी या संसार में, कहत संत जन सोए [३१]

बिरले बिरले पाएये, माया त्यागी संत,
तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी केक अनंत [३२]

मैं तैं मेट्यो मोह तम, उग्यो आत्मा भानु,
संत राज सो जानिए, तुलसी या सहिदानु [३३]

संत --महिमा वर्णन

को बरनै सुख एक, तुलसी महिमा संत की,
जिन्ह के बिमल बिबेक, सेस महेस न कही सकत [३४] [सोरठा]

माहि पत्री करी सिन्धु मसि, तरु लेखनी बनाए,
तुलसी गनपत सों तदपि, महिमा लिखी न जाए [३५]

धन्य धन्य माता पिता,धन्य पुत्र बार सोय,
तुलसी जो रामहिं भजे, जैसेहूँ कैसेहूँ कोय [३६]

तुलसी जाके बदन ते, धोखेहूँ निकसत राम,
ताके पग की पगतरी, मेरे तन को चाम [३७]

तुलसी भगत सुपच भलौ, भजै रैन दिन राम.
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरी को नाम [३८]

अति ऊँचे भू धरनि पर, भुजगन के अस्थान,
तुलसी अति नीचे सुखद, ऊख अन्न अरु पान [३९]

अति अनन्य जो हरि को दासा,
रतै नाम निसिदिन प्रति स्वासा।
तुलसी तेहि समान नहीं कोई,
हम नीकें देखा सब कोई॥ [४०] [चौपाई]

जदपि साधु सबही बिधि हीना,
तद्यपि समता के न कुलीना।
यह दिन रैन नाम उच्चरै,
वह नित मान अगिनी मंह जरै॥ [४१] [चौपाई]

दास रता एक नाम सों, उभय लोक सुख त्यागि,
तुलसी न्यारो ह्वै रहै, दहै न दुःख की आगि [४२]

शान्ति - वर्णन

रैनि को भूषन इंदु है, दिवस को भूषन भानु,
दास को भूषन भक्ति है, भक्ति को भूषन भानु [४३]

ज्ञान को भूषन ध्यान है,ध्यान को भूषन त्याग
त्याग को भूषन शान्ति पद, तुलसी अमल अदाग [४४]

अमल अदाग शान्तिपद सारा,
सकल कलेस न करत प्रहारा।
तुलसी उर धारै जो कोई,
रहै अनन्द सिन्धु मंह सोई॥ [४५] [चौपाई]

बिबिध पाप सम्भव जो तापा,
मिटहिं दोष दुःख दुसह कलापा।
परम सांति सुख रहै समाई,
तहाँ उत्पात न भेदै आई॥ [४६] [चौपाई]

तुलसी ऐसे सीतल संता,
सदा रहै एहि भांति एकन्ता।
कहा करै खल लोग भुजंगा,
कीन्हौ गरल - सील जो अंगा॥ [४७] [चौपाई]

अति सीतल अति ही अमल, सकल कामना हीन
तुलसी ताहि अतीत गनि, बृत्ति सांति लयलीन [४८]

जो कोई कोप भरे मुख बैना,
सन्मुख हतै गिरा - सर पैना।
तुलसी तऊ लेस रिस नाहीं,
सो सीतल कहिये जग माहीं॥ [४९] [चौपाई]

सात दीप नव खंड लौ, तीनि लोक जग मांहि
तुलसी सांति समान सुख, अपर दूसरो नाहिं [५०]

जहाँ सांति सतगुरु की दई,
तहाँ क्रोध की जर जरी गई.
सकल काम बासना बिलानी,
तुलसी बहै सांति सहिदानी [५१] [चौपाई]

तुलसी सुखद सांति को सागर,
संतान गायो कारन उजागर.
तामें तन मन रहै समोई ,
अहम् अगिनि नहिं दाहै कोई [५२] [चौपाई]

अहंकार की अगिनि में,दहत सकल संसार
तुलसी बांची संतजन, केवल सांति आधार [५३]

महा सांति जल पारसी कै, संतभये जन जोई,
अहम् अगिनि ते नहिं दहैं, कोटि करैं जो कोई [५४]

तेज होत तन तरनी को, अचरज मानत लोई,
तुलसी जो पानी भया, बहुरि न पावक होई [५५]

जद्यपि सीतल सम सुखद, जग में जीवन प्राण
तदपि सांति जल जनि गनौ, पावक तेज प्रमाण [५६]

जरै बरे अरु खीज खिजावे,
राग द्वेष मंह जनम गँवावे।
सपनेहूँ सांति नहिं उन देही,
तुलसी जहाँ - जहों ब्रत येही॥ [५७] [चौपाई]

सोई पंडित सोई पारखी, सोई संत सुजान,
सोई सूर सचेत सो, सोई सुभट प्रमान [५८]

सोई ज्ञानी सोई गुनी जन, सोई दाता ध्यानी
तुलसी जाके चित भई , राग द्वेष की हानि [५९]

राग द्वेष की अगिनि बुझानी
काम क्रोध बासना नसानी।
तुलसी जबहिं सांति गृह आई,
तब उरहीं उर फिरि दोहाई॥ [६०] [चौपाई]

फिरी दोहाई राम की, गे कामादिक भाजि,
तुलसी ज्यों रबि के उदय, तुरत जात तम लाजि [६१]

यह बिराग संदीपनी, सुजन सुचित सुनि लेहु,
अनुचित बचन बिचारि के, जस सुधारि तस् देहु [६२]